B.A. Part - I, Paper - I

Lecture - 19

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor, Marwari College Darbhanga

TOPIC समाजीकरण के चरण

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती है ऐसा समझना सर्वथा भूल होगी की समाजीकरण अर्थात सामाजिक सीखने की प्रक्रिया सिर्फ बचपनावस्था में ही होती है क्योंकि यह प्रक्रिया काफी लम्बी होती है, विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने समाजीकरण को कई चरणों में विभक्त कर देखने का प्रयास किया है पारसन्स ने इस पर काफी विस्तार से चर्चा की है उन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर जॉनसन ने चार स्तरों की चर्चा की है -

1. मौखिक स्तर
2. गुदा स्तर
3. अमूर्ति स्तर
4. किशोरावस्था

इन सभी अवस्थाओं का वर्णन इस प्रकार से किया जा सकता है

classmate
Date ____
Page 2

1. मौखिक स्तर (The oral stage) —
यह अवस्था जन्म से प्रारम्भ होकर एक साल की उम्र तक की होती है जिस समय बच्चा जन्म लेता है उसी क्षण से उसे बहुत प्रकार की परेशानियों एवं असुविधाओं का सामना करना पड़ता है वह अपनी संवेदनाओं को रो-चिल्ला कर मुँह के माध्यम से अभिव्यक्त करता है भाषा के अभाव में रोने चीखने के हाव-भाव एवं हाथ पैर चलाने के अलावा अपनी संवेदनाओं को प्रकट करने का उसके पास कोई दूसरा माध्यम ही नहीं होता है यही समाजीकरण के प्रथम सोपान की स्थिति है।

पारसन्स कहते हैं कि माता व शिशु की एक उपव्यवस्था इस stage में बन जाती है बच्चा अपने आपको माँ से अलग नहीं कर पाता है माँ की गोद में उसे कुछ ऐसी अनुभूति होती है जो उसे काफी अच्छी लगती है फ्रॉयड ने इस स्थिति को प्राथमिक पहचान (Primary Identification) कहा है

2. गुद - स्तर या गुदावस्था या शौच सोपान (Anal stage) - यह अवस्था एक - साल से छः साल तक की होती है तथा इस अवस्था में बच्चे सामाजिक रूप से अनुमोदित व्यवहार तथा प्रतिबंधित व्यवहार में अन्तर को समझने लगते हैं। इस अवस्था में बच्चों में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की इच्छा विकसित हो जाती है, उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान होने लगता है और इस तरह से उनमें सामाजिक विभेद (social discrimination) करने की क्षमता विकसित हो जाती है।

3. आन्तराति स्तर या ऑडिपस सोपान (The Oedipal stage) - मनोवैज्ञानिकों ने इस चरण को ऑडिपस संकट का काल कहा है। यहां यह जान लेना उपयुक्त होगा कि ऑडिपस ग्रीक साहित्य का एक ऐसा किरदार था जिसने अनजाने में अपनी माँ से विवाह किया था और इलेक्ट्रा एक ऐसी नायिका थी जिसने अनजाने में अपने पिता के साथ सहवास किया था।

ऑडिपस संकट प्रायः

चार वर्ष से आरम्भ हो जाता है और पाँच वर्ष या अधिक से अधिक छः वर्ष तक रहता है। इसके बाद युवावस्था काल शुरू हो जाता है इस काल में बालक यौन - भेद की ओर सहज आकर्षण का अनुभव करता है तथा ओडिपस कॉम्पलैक्स तथा इलेक्ट्रा कॉम्प्लैक्स जन्म लेते हैं।

4. किशोरावस्था (Adolescence) - यह अवस्था 13 वर्ष से प्रारम्भ होकर 19 साल तक की होती है। यह वह काल होता है जब लड़का न तो छोटा बच्चा होता है और न ही युवक। वह सीमान्त संस्कृति पर होता है। यह स्थिति इसके जीवन में उदासीनता के रूप में अभिव्यक्त होती है क्योंकि बड़े छोटे दोनों के अन्तर्गत उसको पूर्ण रूप स्वीकार नहीं किया जाता।

सामान्य रूप से यह माना जाता रहा है कि किशोरावस्था में लड़के लड़कियों में शारीरिक परिवर्तन के कारण विभिन्न प्रकार के तनाव होते हैं

Scanned by CamScanner

के चार समायोजन के मुख्य सोपान हैं। इन सोपानों के अन्तर्गत भी अन्य तीन stages होती हैं जो निम्नांकित हैं —

1. युवावस्था — युवावस्था 20 साल से 35 साल तक की मानी गयी है। यह आयु उसके जीवन में सर्वाधिक उत्तरदायित्व का होती है। इस अवस्था में युवक की शादी हो जाती है तथा वह पारिवारिक जीवन प्रारम्भ कर देता है। वह कुछ धंधा या नौकरी भी जीविकोपार्जन के लिए शुरू कर देता है। इस अवस्था में व्यक्ति के सामने अनेकों समस्याएं आती हैं जिनके साथ उन्हें समायोजन करना होता है। इस तरह के समायोजन करने में वह बहुत से नए व्यवहारों को सीखता है।

2. प्रौढ़ अवस्था — इस अवस्था में व्यक्ति और आर्थिक उत्तरदायित्व ग्रहण कर लेता है। उसके बच्चे बड़े हो जाते हैं तथा उनकी उच्च शिक्षा की व्यवस्था करनी होती है। ऐसे व्यक्तियों में दूसरों का मार्गदर्शन करने की प्रेरणा

धार्मिक होती हैं। परिवार में उन्हें अपने बहू - बेटियों, नाती - पोतों के साथ समायोजन भी करना होता है फलस्वरूप वे अपने व्यवहार में परिवर्तन कर कुछ नया व्यवहार सीखते हैं। जिससे उनका समाजीकरण होता है।

3. वृद्धावस्था (Stage of old age) - यह अवस्था 55 साल के बाद की होती है। इस आयु में भी समाजीकरण की प्रक्रिया चलती रहती है। वृद्धावस्था में मनुष्य में शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आ जाते हैं। शरीर में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, दुर्बलता आ जाती है, काम करने का पहले वाला सामर्थ्य नहीं रहता और व्यक्ति सामान्यतः अवकाशकालीन जीवन व्यतीत करता है।

इस तरह हम देखते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र विशेष तक सीमित नहीं रहती बल्कि जीवन भर चलती है। नयी - नयी परिस्थितियाँ नए प्रकार के समाजीकरण के लिए द्वार खोलती है।

Sunita Nirwan
5/5/20.

Scanned by CamScanner